

Budhwar Ki Aarti

आरती युगलकिशोर की कीजै।
तन मन धन न्योछावर कीजै ॥

गौरश्याम मुख निरखन लीजै।
हरि का रूप नयन भरि पीजै ॥

रवि शशि कोटि बदन की शोभा।
ताहि निरखि मेरो मन लोभा ॥

ओढ़े नील पीत पट सारी।
कुंजबिहारी गिरिवरधारी ॥

फूलन सेज फूल की माला।
रत्न सिंहासन बैठे नंदलाला ॥

कंचन थार कपूर की बाती।
हरि आए निर्मल भई छाती ॥

श्री पुरुषोत्तम गिरिवरधारी।
आरती करें सकल नर नारी ॥

नंदनंदन बृजभान किशोरी।
परमानंद स्वामी अविचल जोरी ॥